गर्मियों की छुट्टियाँ : सीखने का एक अनौपचारिक अनुभव

प्रकाश चन्द्र गौतम

'स्कूल में दाखिल होने से बहुत पहले ही बच्चों का सीखना शुरू हो जाता है, यही इस सारी चर्चा का शुरुआती बिन्दु है। स्कूल में बच्चा जो कुछ भी सीखता है उसका अपना एक इतिहास होता है। मिसाल के तौर पर बच्चे जब स्कूल में गणित सीखना शुरू करते हैं, तो उससे बहुत पहले ही संख्याओं का उन्हें कुछ-न-कुछ अनुभव हो चुका होता है...।' *एलएस वाईगोत्सकी, माइंड इन सोसाइटी*

सीखना सिर्फ़ स्कूल के चुनौती भरे माहौल पर ही निर्भर नहीं करता : वाईगोत्सकी का सारा काम सीखने में सामाजिक मेल-जोल के महत्व पर ज़ोर देता है। एक तंत्र के रूप में स्कूल मेल-जोल के कई औपचारिक और अनौपचारिक मौक़े प्रदान करता है। यह देखा गया है कि ज़्यादातर वैकल्पिक स्कूल नियमित स्कूलों के मुकाबले ग़ैर-रस्मी या अनौपचारिक तरीक़ों का ज़्यादा इस्तेमाल करते हैं। ऐसे मौक़ों से सीखने का जीवन में एक ख़ास मूल्य है और वह हमेशा के लिए बचपन की एक अनमोल और कभी न भूलने वाली याद का हिस्सा बन जाता है। एक वयस्क के तौर पर हम अपने दिमाग़ को इस तरह से ढाल लेते हैं कि किसी ख़ास समय पर उसे काम करना है और फिर किसी तय समय पर आराम करना है। हम इस चीज़ के इतने आदी हो जाते हैं कि अपनी पसन्द और नापसन्द को भी नजरन्दाज़ कर देते हैं और सीखना एक स्वाभाविक प्रक्रिया बन सके ऐसे किसी मुनासिब समय और मौक़े का इंतज़ार करते रहते हैं। लेकिन बच्चों के लिए सीखने को इस तरह से समय और स्थान में बाँटना सचमुच में बहुत मुश्किल होता है। उनके लिए सीखना एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है जिसका समय और उससे जुड़े दूसरे कारकों के साथ कोई लेना-देना नहीं।

गर्मियों की छुट्टियाँ, एक ठहराव का मौक़ा

बच्चों पर कई तरह के दबाव होते हैं जैसे उन्हें काम पूरा करना होता है, प्रोजेक्ट बनाने होते हैं, सामाजिक और भावनात्मक तौर पर ख़ुद को ढालना होता है, क्लास का काम और फिर घर से करके लाने के लिए दिया गया काम। दुख की बात यह है कि हमने अपने स्कूलों को इस तरह से बना लिया है जहाँ पर बच्चों को "जीवन" के लिए नहीं बल्कि सिर्फ़ "रोज़गार" के लिए ही तैयार किया जाता है। जीवन के हमारे नज़रिए सीमित हो सकते हैं ; अक्सर हम अपने बच्चों पर डॉक्टर, इंजीनियर बनने के लिए, या फिर किसी तरह वे जीवन की कठिनाइयों का सामना करने के लिए तैयार हो जाएँ, इसके लिए दबाव डालते हैं। हमारी बनाई इन ऊँची-ऊँची उम्मीदों के बीच सबसे अधिक बच्चों को ही पिसना पड़ता है क्योंकि आमतौर पर माँ-बाप के अधूरे सपनों को पूरा करने के लिए बच्चों को मजबूर किया जाता है।

ऐसे में गर्मियों की छुट्टियों की यह फ़ुर्सत इतनी महत्त्वपूर्ण हो जाती है क्योंकि तभी बच्चों को यह मौक़ा मिलता है कि इस तरह के सारे दबावों से छुटकारा हासिल कर सकें और छुट्टियों में कुछ समय अपने लिए निकाल सकें। हमारी हताशा और सख़्ती परीक्षाओं में उनके ग्रेड और अंकों पर हमारी टिप्पणियों में साफ़-साफ़ झलकती है। चूँकि यह परीक्षाएँ गर्मियों की छुट्टियों से ठीक पहले होती हैं, सो गर्मियों की छुट्टियाँ हर उम्र के बच्चों के लिए, कभी-कभार नीरस और थकाऊ हो जाने वाली औपचारिक स्कूली व्यवस्था से राहत हासिल करने का एक बड़ा मौक़ा साबित हो सकती हैं।

शहरी सन्दर्भ में छुट्टियों का महत्त्व

यह कोई तुलना की बात नहीं है, लेकिन सच्चाई यही है कि शहरी माहौल में हमने सीखने के ग़ैर-रस्मी मौक़ों को बरबाद या फिर बहुत ही कम कर दिया है। चमक-दमक वाले कोचिंग सेंटर, तरह-तरह की ट्यूशन, दिमाग़ी-विकास और अबेकस गणित की क्लासें, योग और कराटे आदि ने इस सिस्टम के जाल में फँसे हुए माँ-बाप के सपनों का ख़ूब फ़ायदा उठाया है। उन्हें लगता है कि छुट्टियों के दौरान उनके बच्चों की पढ़ाई रुकनी नहीं चाहिए और इसीलिए वह उन्हें तरह-तरह की वैकल्पिक क्लासों में भेज देते हैं। बदक़िस्मती से मीडिया और हमारे सामाजिक संसार ने भी एक काल्पनिक दुनिया खड़ी कर दी है और हमारे बच्चों को व्यवसायिक दुनिया में ला खड़ा किया है, जिसे विभिन्न प्रतियोगिताओं, विशेषज्ञों की टिप्पणियों और चैम्पियनशिप जैसी बाज़ार की चालबाज़ियों ने ख़ूब आकर्षक बना दिया है।

दूसरे सन्दर्भ

एक निर्बाध समय जिसे पहले से तय की गई योजनाओं और जड़ हिस्सों में बाँटा न गया हो, जिसमें कोई बच्चा अपनी उर्जा को फिर से हासिल कर सके, ऐसा तोहफ़ा तो अब बस

गाँवों में ही मिलता है, महानगरों में यह अनुभव मुश्किल से ही मिल पाता है। हो सकता है कि ग्रामीण परिवारों की अपनी चुनौतियाँ, मुश्किलें और संघर्ष हों, लेकिन वे आपसी सम्मान और स्नेह के धागे से सबको जोड़ लेते हैं। आदिवासी गाँवों में लोग मेहमानों का स्वागत करते हैं। भले ही वे अपने मासिक बजट से बाहर जाकर महँगी या दिखावटी चीज़ें मेहमानों के लिए पेश न करें लेकिन चाय, पानी और भोजन से उनकी पूरी आवभगत करते हैं। वे पूरे दिलोजान से मेहमाननवाज़ी करते हैं। उनके बीच छुट्टियाँ बिताने वाले बच्चे भी सम्मान, लोगों से मेल-जोल और सामाजिक तालमेल जैसे गुणों को सीखते हैं। वे लोगों से मिलने-जुलने, मिलकर काम करने और एक साथ रहने का मूल्य समझने लगते हैं। परिवारिक समस्याओं को पूरे समुदाय की समस्या के रूप में देखा जाता है। ऐसे आपस में जुड़े हुए सामाजिक ताने-बाने से लोगों को ज़िन्दगी की मुश्किलों से जूझने का बल मिलता है।

ग्रामीण और अर्ध-ग्रामीण इलाकों में जिस तरह की विविधता के दर्शन होते हैं वह भी एक तरह की सामाजिक सम्पदा है जो जीवन भर के लिए सीखने का आधार बनती है और उनके भावी जीवन में नए आयाम जोड़ती है। सिस्टर सिरिल ने सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित पृष्ठभूमि के बच्चों के लिए एक नाम चुना है- 'रेनबो चिल्ड्रन' या 'इन्द्रधनुषी बच्चे'। यह बच्चे जब मुख्यधारा की शिक्षा में पूरी तरह रच-बस जाते हैं तो उनमें भावनाओं की इतनी छटाएँ, इतने रंग होते हैं जिन्हें एक समान सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि वाले हमारे ज़्यादातर स्कूलों में महसूस ही नहीं किया जा सकता। हालाँकि वे निजी पहचानों, और राय व विचारों में होने वाले मतभेदों को समझते हैं, साथ-ही-साथ अलग-अलग संस्कृतियों, भाषाओं और उनके शब्द-भण्डारों से परिचित होते हैं। एक-दूसरे की मदद करते हैं। गर्मियों की छुट्टियों में बच्चों को खुलकर एक-दूसरे से घुलने-मिलने और किसी तय योजना या औपचारिक तरीक़ों के बिना इन मूल्यों को सीखने का मौक़ा मिलता है।

गर्मियों की छुट्टियाँ : खेलने-कूदने का मौसम

तमाम सीमाओं के बावजूद बच्चे अपने दोस्तों के साथ मस्ती करने का मौक़ा कभी नहीं गँवाते। वह इकट्ठे होते हैं, मिलकर खेलते और काम करते हैं। बच्चे बड़ों की नक़ल उतारना चाहते हैं और इसके लिए वह दुनिया भर के खेल खेलते हैं, एक-दूसरे के साथ मेल-जोल बनाते हुए खेल-ही-खेल में बड़ों का पूरा संसार बना डालते हैं। बड़ों की भूमिका निभाने में, मूक-अभिनय और बिलकुल वैसे ही हाव-भाव दिखाते हुए, उनके पात्रों का चित्रण करने में उन्हें खूब मज़ा आता है। वे बने-बनाए नियमों-कानूनों के ढाँचों से ख़ुद को आज़ाद कर लेते हैं, और समाज के अलग-अलग पात्रों की भूमिका निभाते हुए वयस्कों की सत्ता या ताक़त का भी मज़ा लेते हैं। अभिनय करते हुए अपने संवाद भी वह ख़ुद ही बना लेते हैं।

References

Mind in Society, L S Vygotsky

The Rainbow Programme, Sister C M Cyril Mooney

Escape From Childhood - the Needs and Rights of Children, John Holt

Conversations with children from Shankardah and Dondki villages, Chhattisgarh.

प्रकाश चन्द्र गौतम 2012 से अज़ीम प्रेमजी स्कूल, धमतरी में पढ़ा रहे हैं। इससे पहले वे मध्यप्रदेश और छतीसगढ़ के आदिवासी, ग्रामीण और शहरी इलाकों में 16 साल से ज़्यादा लम्बे अर्से तक स्कूल शिक्षक रह चुके हैं। उन्होंने पहली से बारहवीं क्लास तक के बच्चों को पढ़ाया है। वे अँग्रेज़ी, इतिहास और जीवविज्ञान विषय पढ़ाते हैं। उन्होंने ऑल इंडिया रेडियो, रायपुर, छतीसगढ़ में अस्थाई उद्घोषक के तौर पर भी काम किया है। उनसे *prakash.gautam@azimpremjifoundation.org* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : बलराम बोधि **पुनरीक्षण** तथा **कॉपी एडीटिंग :** स्वाति भदौरिया